पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २९ अंक-१८ सोमवार,२२ दिसम्बर २००८ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर-मुंबई से एक साथ प्रकाशित

मंत्रिमंडल में ब्राह्मणों का वर्चस्व

भोपाल । मध्यप्रदेश मंत्रिमंडल में ब्राह्मणों का बर्चस्व हो गया है। वहीं आदिवासी वर्ग को एक मात्र प्रतिनिधित्व मिला है। पिछड़े वर्ग से चार मंत्री बनाए गए हैं। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज अपने मंत्रिमंडल का विस्तार किया। सीएम स्वयं पिछड़े वर्ग से है। सबसे अधिक ब्राह्मण समुदाय से छह मंत्री शामिल किए गए हैं। गोपाल भार्गव, अनूप मिश्रा, लक्ष्मीकांत शर्मा, अर्चना चिटनीस, डॉ. रामकृष्ण कुसमारिया एवं राजेन्द्र शुक्ला ब्राह्मण समुदाय से हैं। सरकार में दूसरे नंबर पर पिछड़ा वर्ग है। खुद मुख्यमंत्री इसी वर्ग से आते हैं। उनके अलावा बाबूलाल गौर, करण सिंह वर्मा, नारायण सिंह कुशवाहा एवं हरिशंकर खटीक है। जैन एवं अनुसूचित जाति से 3-3 मंत्री बनाए गए हैं।

- ब्राह्मण - 6
- बनिया - 2
- पिछड़ा वर्ग - 4
- जैन समुदाय - 3
- अजा वर्ग - 3
- ठाकुर वर्ग - 2
- आदिवासी - 1
- मराठा - 1

चल पड़ी शिव सरकार

(पिट्स ब्यूरो)

भारी कश्मकश, मंथन और दिल्ली की कई दौड़ के बाद आखिरकार शिवराजसिंह सरकार के 22 सदस्यीय मंत्रिमंडल को शपथ दिला दी गई. शिवराजसिंह की इस टीम में 14 केबिनेट और 8 राज्यमंत्री हैं जिसमें केवल पांच नये चेहरों को मौका दिया गया है जबकि 8 पुराने मंत्रियों को संघ के दबाव के चलते बेदखल कर दिया गया है. इन मंत्रियों पर कई आरोप लगे थे और संघ चाहता था कि केबिनेट में साफ सुथरी छबि के मंत्री ही शामिल हों. बावजूद इसके कुछ वे मंत्री केबिनेट में अपना स्थान सुरक्षित रखने में कामयाब हो गये जिन पर भी आरोप थे. पहली बार भाजपा के दो सांसदों ने विधायक बनकर शिवराजसिंह सरकार में बनाया है.

डॉ. रामकृष्ण कुसमारिया और गौरीशंकर बिसेन तो मंत्री पद पा गये लेकिन अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में स्वास्थ्य राज्यमंत्री का पद सुशोभित करने वाले सरताजसिंह मंत्री पद से वंचित रहे. सरताज के सिरपर ताज न होने से उनके समर्थकों ने भोपाल में खूब हंगामा किया नतीजा इन समर्थकों को पार्टी से निलंबित होना पड़ा और सरताजसिंह को स्वयं दिल्ली की दौड़ लगाने के लिये मजबूर होना पड़ा. चुनाव के दौरान महिला अधिकारी से दुर्व्यवहार के आरोपी तुकोजीराव पंवार पुरस्कृत होकर राज्यमंत्री से केबिनेट मंत्री बना दिये गये वहीं अर्चना चिटनिस की मंत्रिमंडल में वापसी भी कम आश्चर्यजनक नहीं है. मंत्रिमंडल अभी भी अधुरा है और इसमें जातिगत समीकरणों का भले ही ध्यान रखा गया हो. मगर पूरे प्रदेश को प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाया है. 50 जिलों वाले प्रदेश से चौहान ने केवल 18 जिलों को ही प्रतिनिधित्व दिया है. ग्वालियर, विदिशा और दमोह से जहां दो-दो मंत्री चुने गये हैं वहीं सिहौर जिले से भी स्वयं मुख्यमंत्री के अलावा करणसिंह वर्मा को स्थान दिया गया है. मध्य प्रदेश सबसे बड़े महानगर इंदौर से अकेले कैलाश विजयवर्गीय ही मंत्री बन पाये हैं जबकि जबलपुर जैसा महत्वपूर्ण जिला प्रतिनिधित्व पाने में नाकामयाब रहा है. शिवराजसिंह ने मंत्रिमंडल गठन में वरिष्ठ नेताओं के रिश्तेदारों को भी कोई स्थान नहीं दिया है. पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी प्रयासरत थे कि उनके बेटे दीपक जोशी को मंत्रिमंडल में स्थान मिल जाए. लेकिन अंतिम समय में उनका नाम कट गया. इसी तरह पूर्व मुख्यमंत्री वीरेन्द्र कुमार सकलेचा का पुत्र ओमप्रकाश सकलेचा और सुंदर लाल पटवा के भतीजे सुरेन्द्र पटवा को मंत्रिमंडल में स्थान नहीं मिला. इसी तरह कैलाश सारंग के बेटे विश्वास सारंग, विक्रम वर्मा की पत्नी नीना वर्मा, तथा फग्गनसिंह कुलस्ते के रिश्तेदार रामप्यारे कुलस्ते भी मंत्रिमंडल में स्थान प्राप्त नहीं कर सके. हालांकि अभी मंत्रिमंडल का और विस्तार होना है तथा 11 मंत्री और बनाये जा सकते हैं. संभावना है कि शिवराजसिंह अगले विस्तार में अप्रतिनिधित्व वाले जिलों और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को संतुष्ट करने की कोशिश अगले विस्तार में करे.

...तो कम होगी अराजकता

उत्तम झंवर

टीम शिवराज, टीम गहलोत, टीम शीला..। देशभर में सरकारों के गठन का दौर। निरक्षर गोलमा देवी के मंत्रीमंडल में आने से कुछ बदलाव के संकेत तो लगे। परन्तु एमपी यानि उनके मिनिस्टर पति का काम में हस्तक्षेप कितना बदलाव होने देगा, इस बात में संदेह है। वहीं मुंबई में जिंदगी तो ट्रेक पर लौटने लगी है। एकमात्र जिंदा पकड़ में आया आतंकवादी भी मुद्दे की कोई बात बता नही पा रहा है। हर रोज सुर्खियों में कभी उसका रोना तो कभी उसकी जिंदगी के अनछुए पहलूओं की चर्चा है। वो पाकिस्तानी है इस सच्चाई को भी सर्टिफाई किया जा रहा है। लोगों में अब सिस्टम के खिलाफ रोष बढता जा रहा है। अब न मिल सके परिणामों के कारण वे खुद ही कोई निर्णय लेना चाहते है। लोगों में बढ़ते रोष का ही परिणाम ही बुश पर उछाला गया जूता है।

कोई एक ऐसी जगह हो जहां से लोगों को कुछ सूकून मिल रहा हो तो मनोस्थिति ठीक भी रह सकती है। कार्पोरेट कंपनियो में बड़े स्तरों से लेकर सी ग्रेड के कर्मचारियों तक छंटनी का दौर चल रहा है। कटौती की सीमा यहां तक पहुंच चुकी है कि कार्पोरेट दफ्तरों में टायलेट पेपर्स के उपयोग भी बंद किए जा रहे है। यहां तक कि बड़े अधिकारियों को बस के पास दिए जा रहे हैं। झांकी जमाने के लिए उपयोग में लाई जा रही चीजें अब प्रतिबंधित लिस्ट में शामिल हैं। इसके विपरीत कई कंपनियां व बैंक आदि रोजगार ला रहे है। नफे-नुकसान की गणित के बीच मन की शांति खोज लेना किसी बडे ट्रेजर हंट की तरह है। खुशियों के इस खजाने को यदि सांता क्रिसमस पर ले आए तो समूचे विश्व में फैली अराजकता को कम किया जा सकेगा।